मध्यकालीन
भारत
संपादक
इरफ़ान हबीब
10

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली पटना इलाहाबाद कोलकाता
शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंज़िल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017
वेबसाइट : www.rajkamalprakashan.com ई-मेल : info@rajkamalprakashan.com

पहला संस्करण : 2015

अनुवादक : नरेश 'नदीम'

मूल्य : ₹ 95

राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002 द्वारा प्रकाशित
तथा बी.के. ऑफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032 द्वारा मुद्रित

Irfan Habib (Ed.) : MADHYAKALEEN BHARAT-10

ISBN : 978-81-267-2762-9

अमीर ख़ुसरो की भारत की धारणा

सैयद अली नदीम रिज़वी

ऐसा मालूम होता है कि हिन्दवी-फ़ारसी साहित्य में तेरहवीं सदी तक एक सुस्पष्ट भौगोलिक इकाई के रूप में भारत की धारणा एक गंगा-जमनी तहज़ीब की समझ और साथ में देश से प्रेम की भावना के साथ-साथ जन्म ले चुकी थी। ऐसी देशभक्ति और साझी विरासत के विचारों का सबसे प्रमुख उदाहरण देहली सल्तनत के राजकवि अमीर ख़ुसरो की रचनाओं में मिलता है।

अमीर ख़ुसरो का जन्म 1253 में आज के जिला एटा (उत्तर प्रदेश) के पटियाली गाँव में हुआ। उनके पिता अमीर सैफ़ुद्दीन महमूद एक तुर्क थे, जो ख़ुसरो के जन्म से कुछ साल पहले इल्तुतमिश के शासनकाल के दौरान उज़बेकिस्तान के नगर कुश (आज का शहरे-सब्ज़) से भारत आए थे। उनकी माता देहली के एक कुलीन इमादुल-मुल्क की बेटी थीं।[1] ख़ुसरो एक ज़बरदस्त लिक्खाड़ थे और वे क़िरानुस्सा'दैन, मिफ़्ताहुल फ़ुतूह, शीरीं व ख़ुसरो, हश्त बिहिश्त, मस्नवी देवलरानी व ख़िज़्र ख़ान, मतलउदल-अनवार, एजाज़े-ख़ुसरवी, ख़ज़ायनुल-फ़ुतूह और नूह सिपिह्‌र जैसी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ रची हैं।[2] इनमें से लगभग सभी रचनाओं में ख़ुसरो के ऐसे बयान भी मौजूद हैं जो भारत के बारे में उनकी दृष्टि और धारणा को समझने में हमें मदद देते हैं। फिर भी देशभक्ति सम्बन्धी बयानों के सिलसिले में नूह सिपिह्‌र सबसे अधिक सम्पन्न मालूम होती है।

नूह सिपिह्‌र एक मस्नवी है जिसे ख़ुसरो ने 1318 में पूरा किया था और यह मुबारक शाह ख़लजी की तारीफ़ में है। यह भारत के बारे में ख़ुसरो के विचारों को सबसे मुकम्मल ढंग से पेश करती मालूम होती है, ये विचार हैं जिनको विकसित करने की कोशिश उन्होंने पहले की रचनाओं में की थी। यह रचना नौ अध्यायों में विभाजित है, जो नौ आकाशों यानी कि स्वर्ग के नौ क्षेत्रों (सिपिह्‌र) की संगत है। भारत का एक लम्बा और विस्तृत गुणगान हमें इसके तीसरे अध्याय में मिलता है। अमीर ख़ुसरो फ़ख़्र के साथ ऐलान करते हैं :

- रक़ीब अगर ताना देता है कि मैं दूसरे मुल्कों पर हिन्द को क्यों तरजीह देता हूँ (तो मैं कहूँगा कि) इस दावे (हुज्जत) के दो कारण हैं। पहला कारण यह है कि इस देश को अनन्तकाल से होना ही था। मेरे जन्म (मौलूद), रिहाइश (मावा) और मातृभूमि (वतन)।[3]

अपनी मातृभूमि की प्रशंसा और उसे दी जानेवाली तरजीह को वे आगे पैग़म्बर का एक मशहूर कथन सामने रखकर उचित ठहराते हैं : ''मातृभूमि से प्रेम सच्चे दीन का एक बुनियादी अंग है। (हुब्बुल-वतन मिन अल-ईमान।)'' उनका दावा है कि यह उनके दीन का एक बुनियादी तत्त्व है।[4]

इस अध्याय के आरम्भिक भाग में ख़ुसरो स्पष्ट करते हैं कि भारत की तारीफ़ इसी भाग के लिए आरक्षित रखी गई थी कि दोनों का, यानी सातवें आसमान (जिसकी संगत पर अध्याय है) और हिन्द का स्वामी ग्रह ज़ुहल (शनि) है।[5] उनका दावा है कि हालाँकि रूम (यूनान), ख़ुरासान (ईरान) और ख़ोतन (चीन) अपनी श्रेष्ठता का दावा (ताना) करते हैं पर उनको इस देश की जादूगरी का इल्म है और इसलिए वे साबित कर सकते हैं कि हिन्द किसी भी और देश से श्रेष्ठ है। कारण यह है कि–

- अगर ख़ालिक़ मुझे इस क़ाबिल बनाता है (कि) मेरा तेज़ी से रवाँ क़लम (किल्क) को गुणों को उनकी पूर्णता में व्यक्त करने की शक्ति मिले तो मैं चाहूँगा कि धरती पर इस मुल्क की महानता को (छिपा हुआ) न रहने दूँ बल्कि उसे स्वर्ग की बुलन्दी (खुल्दे-बरीं) तक पहुँचा दूँ।[6]

इसके बाद ख़ुसरो इस दावे (हुज्जत) के समर्थन में सात बुद्धिसंगत प्रमाण (अक़्ली अस्बात) पेश करते हैं कि हिन्द इस धरती का स्वर्ग है। पहला तर्क यह है कि स्वर्ग से बाहर निकाले जाने के बाद आदम को इसी देश में पनाह मिली थी। उनकी राय में "चूँकि हिन्द ऐन स्वर्ग-समान (ख़ुल्द-निशान) है, इसलिए आदम यहाँ उतरे और यहाँ उन्हें आराम मिला।"[7] दूसरे, हिन्द स्वर्ग के परिन्दे मोर का मुल्क है। "अगर फ़िरदौस (स्वर्ग) किसी और देश (शब्दशः बाग़) में होता तो यह परिन्दा फिर वहाँ जाता।"[8] तीसरे, साँप भी जो स्वर्ग में मोर का साथी था, उसके साथ यहीं आया, पर चूँकि यह देश अपने शुभ और लाभदायक कामों के लिए जाना जाता था जबकि साँप में काटने जैसी बुराई थी, इसलिए उसे धरती की सतह से ऊपर नहीं बल्कि नीचे जगह दी गई।[9] फिर ख़ुसरो चार और तर्क भी सामने रखते हैं जिनमें उनकी मध्य एशियाई गृहभूमि की कठोर मौसमी दशाओं के मुक़ाबले हिन्द का सन्तुलित मौसम का तर्क भी शामिल है,[10] और पैग़म्बर का यह कथन भी कि ईमानवालों को अच्छी जज़ा (पुरस्कार) इसी दुनिया में नहीं मगर स्वर्ग में मिलेगी जबकि काफ़िरों को यह सब यहीं भोगने को मिलेगा–

- आदम की आमद से लेकर इस्लाम के आने तक हिन्द दीन को न माननेवालों के लिए एक स्वर्ग रहा है, हाल के दौर तक में इन काफ़िरों (गब्र) को शराब व शहद जैसी फ़िरदौस की हर नेमत हासिल रही है।[11] यह साबित करने के बाद कि हिन्द धरती का स्वर्ग है, ख़ुसरो आगे 'रूम, इराक़, ख़ुरासान और क़ंधार पर हिन्द को तरजीह देने' के 'कारण' बतलाते हैं और अपने देश के आदर्श मौसम, उसके फूलों और फलों की चर्चा करते हैं। भारत की सन्तुलित आबो-हवा (जलवायु) की चर्चा करते हुए ख़ुसरो यह टिप्पणी करते हैं–
- वे (ख़ुरासानी) (बेपनाह ठंड के कारण) बहरे बन जाते हैं और (भारत के स्वर्ग होने) के तर्कों को नहीं सुनते, (बल्कि) इसकी बजाय उस पर बेपनाह गर्म मौसम का इलज़ाम धरते हैं।

  (इसके जवाब में) जो कुछ नबी ने कहा था मैं उसे फिर दोहराता हूँ–

  गर्म मौसम तकलीफ़ तो देता है पर बस इतना ही है

  मगर सर्द मौसम के सबब हर कोई मारा जाता है।[12]

भारत की आबो-हवा की और आगे तारीफ़ करते हुए ख़ुसरो कहते हैं कि यह इतना सन्तुलित है कि एक ग़रीब किसान (दहक़ान) बस एक पुरानी चादर (कुहन चादरकी) ओढ़कर अपने मवेशी चराते हुए चरागाह में ही अपनी रातें गुज़ार देता है, एक ब्राह्मण

अलसुबह दरिया के ठंडे पानी में स्नान कर सकता है, जबकि पेड़ की बस एक शाख़ इस देश के ग़रीबों को छाँव देने के लिए काफ़ी है।[13] हिन्द में साल भर बहार बनी रहती है और इसलिए यहाँ भरपूर हरियाली रहती है और सुन्दर ख़ुशबूदार फूल खिलते हैं जो मुरझा जाने के बाद भी अपनी ख़ुशबू से महरूम नहीं होते।[14] हिन्द के रसदार फलों में ख़ुसरो आमों (नग़ज़क), केलों (मूज़ी) जो बेहद नर्म होता है और नबाती बमरी (गन्ना?) के नाम लेते हैं। इलायची (लाची), कपूर (काफ़ूर) और लौंग (क़रनफ़ल) का ज़िक्र उन्होंने हिन्द के ख़ुश्क फलों के रूप में किया है।[15] पान (ताम्बूल) का ख़ास ज़िक्र यूँ आता है कि यह एक ऐसा पत्ता है, जिसे फल (मेवा) की तरह खाया जाता है और दुनिया में कहीं भी उसके जैसी कोई चीज़ नहीं है।'[16] वे हमें बतलाते हैं कि पान जो शायद उन दिनों एक क़ीमती माल रहा होगा, अशराफ (अभिजात वर्ग) के इस्तेमाल की चीज़ था–

- मामूली लोगों (अहले-शिकम) को इसका कोई ज़ौक़ (रुचि) नहीं,
  सिर्फ़ बड़े लोग (मेहतर) और उसके बेटे उसका शौक़ फ़रमाते हैं।
  इसकी ख़ास (तैयारी) हर एक के लिए नहीं होती
  सिर्फ़ क़ुत्बे-फ़लक (शाह) को छोड़कर।[17]

हिन्द और उसकी भौगोलिक सीमाओं के बारे में अमीर ख़ुसरो की धारणा और भी स्पष्ट ढंग से तब सामने आती है जब वे इस मुल्क के लोगों द्वारा बोली जानेवाली मुख़्तलिफ़ ज़बानों (भाषाओं) की चर्चा करते हैं :

- इस मुल्म के हर इलाक़े (अर्सा) और हर हिस्से (नहयैत) में तरह-तरह की ज़बानें हैं। इनके अपने-अपने मुहावरे और अपने क़ायदे होने के सबब ये सरसरी (आरियाती) नहीं हैं, जैसे सिन्धी, लाहौरी (पंजाबी), कश्मीरी, कुबड़ी, धुर-समन्दरी (कन्नड़), तिलंगी (तेलुगू), गूजर (गुजराती), मआबारी (तमिल), गौरी (उत्तरी बंगाल की बोली), बंगाली, अवद (अवधी), देहली। इस मुल्क की सरहदों के अन्दर पुराने ज़मानों से ये हिन्दवी ज़बानें चारों तरफ़ रही हैं और तमाम कामों के लिए ये सभी लोगों द्वारा बोली जाती हैं।[18]

  ग़ौर करने की बात यह है कि ख़ुसरो ने मराठी और मलयालम का ज़िक्र नहीं किया है। मलयालम शायद उस समय तक तमिल से स्वतंत्र नहीं हुई थी, लेकिन मराठी का ज़िक्र न आने को स्पष्ट करना मुश्किल है, बशर्ते कि मराठी को 'कुबड़ी' न कहा गया हो। उन दिनों आम बोली जानेवाली भाषाओं (हिन्दवी और फ़ारसी) और इलाक़ाई बोलियों की चर्चा करते हुए ख़ुसरो कहते हैं–

- यक़ीनन! तुर्की की मक़बूलियत इसी तरह बढ़ी।
  यह धरती पर तुर्क हुकूमत के साथ फैली,
  कारण कि यह विशिष्ट जन (ख़ास) की भाषा थी।
  आम लोगों ने भी इसे अपनाया और यह दुनिया में मक़बूल (लोकप्रिय) हुई।
  इसी तरह हिन्द को भी अपनी बोलचाल की ज़बानें मिलीं।
  हिन्दवी हिन्द की (बोलचाल की) ज़बान है और रही है।
- ग़ौरी और तुर्क आए, और
  वे फ़ारसी बोलते थे
  जो लोग उनके सम्पर्क में आए उन्होंने

धीरे-धीरे (बह ब-बह) फ़ारसी का इल्म हासिल किया।
जो दूसरी ज़बानें थीं वे
अपने-अपने इलाक़ों तक महदूद रहने के लिए मजबूर थीं।[19]

ख़ुसरो हिन्दवालों की बहुमुख भाषाई प्रतिभा का ज़िक्र भी करते हैं। कहते हैं कि जहाँ हिन्दोस्तानी विदेशी भाषाओं में से किसी में भी आसानी से बातचीत कर सकते हैं, वहीं हिन्द से बाहर (अक़्स-ए-दीगर) के लोग 'भारतीय बोलियों (सुख़ने-हिन्दी) को बोलने में असमर्थ रहते हैं–

- ख़िता के लोग, मंगोल, तुर्क और अरब
  भारतीय बोलियों को बोलें तो उनके होंठ सिल जाते हैं
  पर हम दुनिया की कोई भी ज़बान बोल सकते हैं
  वैसी ही महारत के साथ जैसे चरवाहा अपनी भेड़ों की देखभाल करता है।[20]

ख़ुसरो का देशप्रेम केवल सैद्धान्तिक नहीं है। उनका दावा है कि उन्होंने भी भारतीय भाषाओं में महारत हासिल की है–

- इन लोगों की ज़्यादातर ज़बानों का
  मैंने इल्म पाया (अर्थात् उन्हें सीखा) है
  मैं उन्हें जानता हूँ, उनके बारे में छानबीन की है और उनको बोल सकता हूँ,
  और एक हद तक, कमोबेश, उनसे रौशनख़्याली भी पाई है।[21]

अमीर ख़ुसरो संस्कृत और उसके समृद्ध साहित्य की चर्चा भी करते हैं, पर कहते हैं कि यह ब्राह्मणों की भाषा है। उनमें भी सभी लोग इस भाषा के माहिर होने का दावा नहीं कर सकते। अरबी की तरह संस्कृत का अपना व्याकरण है, रूप है, व्यवस्था, तकनीकें, क़ायदे और साहित्य हैं।[22] आगे–

- इस भाषा (संस्कृत) में मोतियों में मोती होने का गुण मौजूद है
  यह अरबी से घटिया है पर दरी (फ़ारसी) से श्रेष्ठतर है।[23]

भारी फ़ख़्र के साथ ख़ुसरो कहते हैं कि इल्म और महारत हासिल करने के लिए पूरी दुनिया से विद्वान् लोग हिन्दोस्तान में आते हैं। लेकिन इल्म हासिल करने के लिए कोई ब्राह्मण कभी हिन्द की सरहदों से बाहर नहीं जाता, क्योंकि इसकी कोई ज़रूरत भी नहीं है।[24]

- ब्राह्मण अपने इल्म और अक़्ल में
  अरस्तू की तमाम किताबों (के इल्म) से कहीं स्पष्ट दर्जे ऊपर हैं
  यूनानवालों ने फ़लसफ़े में दुनिया को जो कुछ दिया है,
  ब्राह्मणों के पास (उसकी) कहीं ज़्यादा दौलत मौजूद है।[25]

लेकिन ये ब्राह्मण स्वभाव से बड़े चुप्पे क़िस्म के होते हैं और ज़्यादा नहीं बोलते, जिसके कारण उनका इल्म दुनिया से छिपा हुआ रहता है और फिर उसे ग़लत समझा जाने लगता है। फिर भी ख़ुसरो अपना शुमार उन लोगों में करते हैं, जो उनके सद्गुणों और उनकी ख़ूबियों के क़ायल हैं–

- चूँकि किसी ने ब्राह्मणों से कुछ सीखने की कोशिश नहीं की
  इसलिए वे अभी तक अज्ञात बने हुए हैं।
  पर मैंने इस बारे में एक हद तक छानबीन की है
  (और) उनके दिल पर विश्वास की मुहर लगाने के बाद

उनके (ज्ञान) भेदों के बारे में कुछ अन्तःदृष्टि पाई है।

जो कुछ मैंने जाना है, उसका अभी तक (किसी भी तरफ़ से) खंडन नहीं हुआ है।[26]

हिन्दवालों के बेहतर ज्ञान-विज्ञान की चर्चा करते हुए वे कहते हैं :

- हो सकता है मेरे ख़्यालों में ज़रा-सा पूर्वाग्रह मौजूद हो
फिर भी जो कुछ मैं कहूँगा उसका औचित्य भी पेश करूँगा।
हालाँकि ज्ञानी लोग (दूसरी जगहों पर भी) मौजूद हैं,
पर दानिश (बुद्धिमत्ता) और हिकमत (दर्शनशास्त्र) को इतनी अच्छी तरह कहीं लिखा नहीं गया है।[27]

तर्कशास्त्र (मन्तिक़), खगोलशास्त्र (तंजीम) और पंडिताऊ धर्मशास्त्र (कलाम), फ़िक़ह (इस्लामी विधिशास्त्र) को छोड़कर, भारत में हर जगह पाए और बख़ूबी समझे जाते हैं। तमाम बौद्धिक विज्ञानों, प्रकृति विज्ञानों (तबीई) और गणित (रियाज़ी) का जन्म हिन्द में हुआ।[28] अंकों (हिन्दसों) के भारतीय मूल के बारे में ख़ुसरो लिखते हैं–

- अक़्ल अगर पूरी दुनिया का चक्कर भी मार आए,
हिकमत (अंकगणित) की ऐसी दौलत वह कहीं नहीं पाएगी
मसलन लीजिए 'सिफ़र' (शून्य) को जो अपने आपमें एक ख़ाली निशान है
पर जब किसी और के साथ इस्तेमाल होता है तो बामानी बन जाता है।
जब इससे रियाज़ी (गणित) का इल्म पैदा हुआ तो
(टालमी की) किताब अल्माजेस्ट और अक़्लीदस (यूक्लिड) की किताब वजूद में आई।
जोड़ और घटाने के साथ हिन्दसों का यह इल्म अगर इस व्याख्या पर आधारित न हो तो बन जाता है सिफ़र।
आलिम लोग (हिन्दसों के) इस इल्म में कुछ भी जोड़ नहीं सके हैं।
और वह अपने जन्म के बाद से ही अपरिवर्तित रहा है।
- इसकी ईजाद करने वाला असा नाम का एक ब्राह्मण था
और इसमें तो कोई शक है ही नहीं
उसी से (इस इल्म का) नाम पड़ा हिन्द असा
जिसे दानिशवरों ने छोटा करके पढ़ा हिन्दसा
इस इल्म का बानी एक ब्राह्मण था
और ये बात चाहे जितनी भी अजीब लगे पर यही
यूनान के इल्म का भी बना आधार।[29]

हिन्दसों और ख़ासकर सिफ़र के आविष्कार के अलावा अमीर ख़ुसरो हिन्दवालों द्वारा शतरंज के आविष्कार का ज़िक्र भी करते हैं, जो उनकी राय में "दुनिया के लिए हिन्द का एक अनोखा योगदान" था।[30] दुनिया की संस्कृति में भारत का ऐसा ही एक और योगदान कलीला व दिमना (पंचतंत्र) था" जिसमें "कल्पना की इतनी सुन्दर उड़ान" दिखाई देती है।[31] हिन्दवालों के एक और अनोखे योगदान का ज़िक्र ख़ुसरो ने किया है, यह है भारतीय संगीत जो जानवरों तक पर सम्मोहन का प्रभाव छोड़ता है।[32]

इन तमाम बातों के अलावा ख़ुसरो का देशप्रेम उनसे हिन्द की नारी के हुस्न के,[33] हिन्द के कपड़ों के,[34] यहाँ तक कि उसके पशुओं तक के[35] गीत भी गवाता है। वे हिन्दुस्तानी तोते

(तूती), मुटरी (शाक), कव्वे, चातक, कठफोड़वा, बगुला, मोर, बन्दर और हाथी का ख़ास ज़िक्र करते हैं कि अपनी बुद्धि के कारण ये पशु दुनिया भर में अनोखे हैं। रही शराब तो वे पुकार उठते हैं– ''मुझको मय दो पर किसी और मुल्क की नहीं। मुझे शराब (गन्ने का रस) दो तो इसी मुल्क की।''[36]

अमीर ख़ुसरो की नज़रों में हिन्द सिर्फ़ उनका वतन ही नहीं बल्कि एक भौगोलिक, सांस्कृतिक और बहुधार्मिक इकाई भी है। अपनी एक रचना में वे एक ऐसे हिन्दू का ज़िक्र करते हैं जो अग्नि की पूजा करता है। उससे जब पूछा गया कि वह ऐसा क्यों करता है तो उसका जवाब था कि जलती हुई आग उसके अन्दर एक दैवी तड़प और नश्वरता (फ़ना) को पाने की इच्छा पैदा करती है, ताकि वह शाश्वत जीवन (बक़ा) को पा सके। ख़ुसरो इस भावना की तारीफ़ करते हैं।[37] हालाँकि ख़ुसरो भारत में बाहर से आए एक ख़ानदान की दूसरी ही पीढ़ी के थे, पर लगता है कि एक अद्वितीय देश के रूप में, दूसरे देशों से अनेक प्रकार से भिन्न एक देश के रूप में हिन्दस्तान की धारणा को उन्होंने पूरी तरह आत्मसात् कर लिया था। मिसाल देखिए–

- कितना मनमोहक है मौसम इस मुल्क का
  जहाँ इतने सारे परिन्दे मस्ती में गाते हैं
  इस ज़मीन से उठते हैं शायर, संगीतकार और गायक
  घास जैसी बड़ी तादाद में और प्राकृतिक ढंग से...
  कितनी महान् है यह धरती जो पैदा करती है
- ऐसे इनसानों को जो इनसान कहाएँ!
  अक़्ल है इस धरती का क़ुदरती तोहफ़ा,
  अनपढ़ भी आलिम जितने ही उम्दा हैं।
  जन-जन के जीवन से बेहतर कोई नहीं उस्ताद हुआ है
  यही तो है जो लोगों को देता है रौशनी।
  यह तो है अल्लाह का तोहफ़ा!
  दूसरे मुल्कों में कितना क़ामयाब है यह सब
  यह है इसी धरती की तहज़ीब का तोहफ़ा...
  कोई ईरानी, कोई यूनानी, कोई अरब ग़र कभी जो आए
  किसी से कुछ भी माँगे वह, इसकी कोई शर्त नहीं है
  लोग उसे भी अपनों जैसा ही गरदा मानेंगे।
  करेंगे उसकी उम्दा ख़ातिर, जीतेंगे यूँ उसका दिल!
  कभी अगर वे हँसी उड़ाएँगे भी उसकी
  उन्हें पता है फूलों जैसी मुस्कान है क्या फिर।[38]

भारत की इस आन-बान-शान के साथ ख़ुसरो अपनी शोहरत को जोड़ने से भी नहीं बचते–

- फ़लक के नीचे ख़ुसरो जैसा शे'रो-सुख़न का
  कोई भी अब तक जादूगर नहीं रहा है।
  सबब कि ख़ुसरो हिन्द का है, और कुत्बे आलम (सुलतान) की तारीफ़ करे है
  आसमान के रहने वालों में जो सबसे है अक़्लमन्द

वह गुरु भी गर आ जाए आसमान से
(इस क़ौल पर) उसे भी कोई उज़्र न होगा
इसकी सच्चाई को वह भी मानेगा।[29]

सन्दर्भ और टिप्पणियाँ

(1) ख़ुसरो के जीवन-चरित्र के बारे में मुहम्मद वहीद मिर्ज़ा की रचना 'द लाइफ एंड वर्क्स ऑफ अमीर ख़ुसरो', कलकत्ता, 1935; मुहम्मद हबीब हज़रत अमीर ख़ुसरो ऑफ देहली, 'पालिटिक्स एंड सोसायटी ड्यूरिंग द अर्ली मेडिवल पीरियड', 'कलेक्टेड वर्क्स ऑफ प्रोफ़ेसर मुहम्मद हबीब', सम्पादन : के.ए. निज़ामी, अलीगढ़, 1974, एक, पृष्ठ 299-315 देखें।

(2) ख़ुसरो की प्रामाणिक रचनाओं की सूची के बारे में वहीद मिर्ज़ा, पूर्वोक्त देखें। ख़ुसरो की देशप्रेम सम्बन्धी कविताओं की एक विस्तृत सूची के लिए एस. सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, हिन्दस्तान अमीर ख़ुसरो की नज़र में, आज़मगढ़, तिथि अज्ञात (उर्दू) देखें।

(3) अमीर ख़ुसरो, 'नूह सिपिह्र', सम्पादन : वहीद मिर्ज़ा, कलकत्ता, 1950, पृष्ठ 150 देखें। इस रचना के तीसरे अध्याय के अंग्रेज़ी अनुवाद के लिए 'इंडिया ऐज़ सीन बाई अमीर ख़ुसरो', अनुवाद : आर. नाथ और फ़ैयाज़ ग्वालियरी, जयपुर, 1981 देखें। इस विषय पर कुछ अन्य रचनाएँ ये हैं : सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, नेशनलिस्ट सेन्टीमेन्ट्स इन इंडोपार्शियन लिटरेचर, 'इंडो-इरानिका', 28, अंक 1, मार्च 1965, पृष्ठ 1-34; एस बी निगम, अमीर ख़ुसरो एंड इंडिया, इंडो-इरानिका, 24, अंक 3-4, पृष्ठ 67-73; शुजाअत हुसैन, ए ग्रेट इंडियन पैट्रियट, 'अमीर ख़ुसरो मेमोरियल वाल्यूम', भारत सरकार, 1975, पृष्ठ 21-32 देखें।

(4) नूह सिपिह्र, पृष्ठ 150

(5) उपरोक्त, पृष्ठ 147

(6) उपरोक्त, पृष्ठ 148

(7) उपरोक्त, पृष्ठ 151-52

(8) उपरोक्त, पृष्ठ 152

(9) उपरोक्त, पृष्ठ 153

(10) उपरोक्त, पृष्ठ 154-56

(11) उपरोक्त, पृष्ठ 156

(12) उपरोक्त, पृष्ठ 158-59

(13) उपरोक्त, पृष्ठ 159

(14) उपरोक्त, पृष्ठ 159-60, देवलरानी ख़िज़्र ख़ान, अलीगढ़, 1917, पृष्ठ 128-33

(15) नूह सिपिह्र, पृष्ठ 160, क़िरानुस्सादैन, अलीगढ़, 1918, पृष्ठ 33-34, 109, देवलरानी ख़िज़्र ख़ान, पृष्ठ 43-44 भी देखें।

(16) नूह सिपिह्र : क़िरानुस्सादैन, पूर्वोक्त, पृष्ठ 145-46, देवल रानी ख़िज़्र ख़ान, पृष्ठ 43 भी देखें।

(17) नूह सिपिह्र, पृष्ठ 161

(18) उपरोक्त, पृष्ठ 179-80

(19) उपरोक्त, पृष्ठ 178

(20) उपरोक्त, पृष्ठ 166

(21) उपरोक्त, पृष्ठ 172-73

(22) उपरोक्त, पृष्ठ 180

(23) उपरोक्त, पृष्ठ 181, देवलरानी ख़िज़्र ख़ान, पृष्ठ 41-43 भी देखें।

(24) नूह सिपिह्र, पृष्ठ 167, पृष्ठ 169 भी देखें।

(25) उपरोक्त, पृष्ठ 162

(26) उपरोक्त, पृष्ठ 163

(27) उपरोक्त, पृष्ठ 161

(28) उपरोक्त, पृष्ठ 162

(29) उपरोक्त, पृष्ठ 168

(30) उपरोक्त, पृष्ठ 170
(31) उपरोक्त, पृष्ठ 169
(32) उपरोक्त, पृष्ठ 170-72
(33) देवलरानी ख़िज्र ख़ान, पृष्ठ 133-34, शीरीं व ख़ुसरो, अलीगढ़, 1925, पृष्ठ 25-29, हश्त बिहिश्त, अलीगढ़, 1978, पृष्ठ 29-30 भी देखें।
(34) क़िरानुस्सा'दैन, पृष्ठ 132, देवलरानी ख़िज्र ख़ान, पृष्ठ 43
(35) नूह सिपिह्र, पृष्ठ 18-19
(36) उपरोक्त, पृष्ठ 210
(37) देवलरानी ख़िज्र ख़ान, पृष्ठ 195-96
(38) सिपिह्र, पृष्ठ 442-43
(39) उपरोक्त, पृष्ठ 172